

.. Shri Lalitasahasranama stotram ..

॥ श्रीलिलतासहस्रनामस्तोत्रम् ॥

Sanskrit Document Information

Text title : lalitaasahasranaama stotra

File name : lalita.itx

Category: sahasranAma, devii, dashamahAvidyA, lalita, stotra

Location : doc_devii
Language : Sanskrit

Subject : hinduism/religion

Transliterated by : M. Giridhar giridharmadras at gmail.com

Proofread by: Kirk Wortman kirkwort at hotmail.com, Sunder Hattangadi, Manda Krishna Srikanth 1) Book "Mantra Pushpam"; published by Ramakrishna Math, Khar, Mumbai 2) Book "Sri Lalita Sahasranama"; published by Sri Ramakrishna Math Mylapore, Madras; with text, transliteration and translation edited by Swami Tapasyananda 3) Videotape – of

Vedic Pandits, recorded from the Maharishi Channel Latest update : August 2, 2002, December 24, 2013

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com Site access : http://sanskritdocuments.org

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

August 20, 2017

sanskritdocuments.org

───

॥ श्रीलिलतासहस्रनामस्तोत्रम् ॥

Includes comments on background and importance in the end written by M. Giridhar

॥ न्यासः ॥

अस्य श्रीलिलतासहस्रनामस्तोत्रमाला मन्त्रस्य । विश्वन्यादिवाग्देवता ऋषयः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीलिलतापरमेश्वरी देवता । श्रीमद्वाग्भवकूटेति बीजम् । मध्यकूटेति शक्तिः । शक्तिकूटेति कीलकम् । श्रीलिलतामहात्रिपुरसुन्दरी-प्रसादिसिद्धिद्वारा चिन्तितफलावास्यर्थे जपे विनियोगः ।

॥ ध्यानम् ॥

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौिल स्फुरत् तारा नायक शेखरां स्मितमुखी मापीन वक्षोरुहाम् । पाणिभ्यामलिपूर्ण रत्न चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं सौम्यां रत्न घटस्थ रक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम् ॥

The Divine mother is to be meditated upon as shining in a vermilion-red body, with a triple eyes, sporting a crown of rubies studded with the crescent moon, a face all smiles, a splendid bust, one hand holding a jewel-cup brimming with mead, and the other twirling a red lotus.

अरुणां करुणा तरङ्गिताक्षीं धृत पाशाङ्करा पुष्प बाणचापाम् । अणिमादिभि रावृतां मयूखै-

रहमित्येव विभावये भवानीम् ॥

I meditate on the great Empress. She is red in color, and her eyes are full of compassion, and holds the noose, the goad, the bow and the flowery arrow in Her hands. She is surrounded on all sides by powers such as aNimA for rays and She is the Self within me.

ध्यायेत् पद्मासनस्थां विकसितवदनां पद्मपत्रायताक्षीं हेमाभां पीतवस्त्रां करकितलसद्धेमपद्मां वराङ्गीम् । सर्वालङ्कार युक्तां सतत मभयदां भक्तनम्रां भवानीं श्रीविद्यां शान्त मूर्तिं सकल सुरनुतां सर्व सम्पत्प्रदात्रीम् ॥

The Divine Goddess is to be meditated upon as seated on the lotus with petal eyes.

She is golden hued, and has lotus flowers in Her hand. She dispels fear of the devotees who bow before Her. She is the embodiment of peace, knowledge (vidyA), is praised by gods and grants every kind of wealth wished for.

सकुङ्कम विलेपनामिलकचुम्बि कस्तूरिकां समन्द हिसतेक्षणां सशर चाप पाशाङ्कशाम् । अशेषजन मोहिनीं अरुण माल्य भूषाम्बरां जपाकुसुम भासुरां जपविधौ स्मरे दिम्बकाम् ॥

I meditate on the Mother, whose eyes are smiling, who holds the arrow, bow, noose and the goad in Her hand. She is glittering with red garlands and ornaments. She is painted with kumkuma on her forehead and is red and tender like the japa flower.

॥ अथ श्रीलिलितासहस्रनामस्तोत्रम् ॥

ॐ श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी श्रीमत्-सिंहासनेश्वरी। चिद्ग्नि-कुण्ड-सम्भूता देवकार्य-समुद्यता॥१॥

उद्यद्भानु-सहस्राभा चतुर्बाहु-समन्विता । रागस्वरूप-पाशाढ्या कोधाकाराङ्कशोज्वला ॥ २॥

मनोरूपेक्षु-कोदण्डा पञ्चतन्मात्र-सायका । निजारुण-प्रभापूर-मज्जद्वह्माण्ड-मण्डला ॥ ३॥

चम्पकाशोक-पुन्नाग-सौगन्धिक-लसत्कचा। कुरुविन्दमणि-श्रेणी-कनत्कोटीर-मण्डिता॥ ४॥

अष्टमीचन्द्र-विभ्राज-दिलकस्थल-शोभिता। मुखचन्द्र-कलङ्काभ-मृगनाभि-विशेषका॥ ५॥

वदनस्मर-माङ्गल्य-गृहतोरण-चिल्लिका ।

वऋलक्ष्मी-परीवाह-चलन्मीनाभ-लोचना ॥ ६॥

नवचम्पक-पुष्पाभ-नासादण्ड-विराजिता । ताराकान्ति-तिरस्कारि-नासाभरण-भासूरा ॥ ७॥

कदम्बमञ्जरी-क्रुप्त-कर्णपूर-मनोहरा। ताटङ्क-युगली-भूत-तपनोडुप-मण्डला॥ ८॥

पद्मराग-शिलादर्श-परिभावि-कपोलभूः । नवविद्रम-बिम्बश्री-न्यकारि-रदनच्छदा ॥ ९॥ or दशनच्छदा

शुद्ध-विद्याङ्कराकार-द्विजपङ्कि-द्वयोज्ज्वला । कर्पूर-वीटिकामोद-समाकर्षि-दिगन्तरा ॥ १०॥

निज-सल्लाप-माधुर्य-विनिर्भिर्त्सित-कच्छपी। or निज-संलाप मन्दिस्मित-प्रभापूर-मजत्कामेश-मानसा॥ ११॥

अनाकित-सादृश्य-चिबुकश्री-विराजिता। or चुबुकश्री कामेश-बद्ध-माङ्गल्य-सूत्र-शोभित-कन्धरा॥ १२॥

कनकाङ्गद-केयूर-कमनीय-भुजान्विता ।

रत्नग्रैवेय-चिन्ताक-लोल-मुक्ता-फलान्विता ॥ १३॥ कामेश्वर-प्रेमरत्न-मणि-प्रतिपण-स्तनी । नाभ्यालवाल-रोमालि-लता-फल-कुचद्वयी ॥ १४॥ लक्ष्यरोम-लताधारता-समुन्नेय-मध्यमा । स्तनभार-दलन्मध्य-पृहबन्ध-वलित्रया ॥ १५॥ अरुणारुण-कौसुम्भ-वस्त्र-भास्वत्-कटीतटी । रत्न-किङ्किणिका-रम्य-रशना-दाम-भूषिता ॥ १६॥ कामेश-ज्ञात-सौभाग्य-मार्दवोरु-द्वयान्विता। माणिक्य-मुकुटाकार-जानुद्वय-विराजिता ॥ १७॥ इन्द्रगोप-परिक्षिप्त-स्मरत्णाभ-जिङ्कका । गूढगुल्फा कूर्मपृष्ठ-जियष्णु-प्रपदान्विता ॥ १८॥ नख-दीधिति-संछन्न-नमज्जन-तमोगुणा । पद्वय-प्रभाजाल-पराकृत-सरोरुहा ॥ १९॥ सिञ्जान-मणिमञ्जीर-मण्डित-श्री-पदाम्बुजा । or शिञ्जान मराली-मन्दगमना महालावण्य-शेवधिः ॥ २०॥ सर्वारुणाऽनवद्याङ्गी सर्वाभरण-भूषिता । शिव-कामेश्वराङ्कस्था शिवा स्वाधीन-वल्लभा ॥ २१॥ सुमेरु-मध्य-शृङ्गस्था श्रीमन्नगर-नायिका । चिन्तामणि-गृहान्तस्था पञ्च-ब्रह्मासन-स्थिता ॥ २२॥ महापद्माटवी-संस्था कदम्बवन-वासिनी । सुधासागर-मध्यस्था कामाक्षी कामदायिनी ॥ २३॥ देवर्षि-गण-संघात-स्तूयमानात्म-वैभवा । भण्डासुर-वधोद्युक्त-शक्तिसेना-समन्विता ॥ २४॥ सम्पत्करी-समारूढ-सिन्धुर-व्रज-सेविता। अश्वारूढाधिष्ठिताश्व-कोटि-कोटिभिरावृता ॥ २५॥ चक्रराज-रथारूढ-सर्वायुध-परिष्कृता । गेयचक-रथारूढ-मन्त्रिणी-परिसेविता ॥ २६॥

किरिचक-रथारूढ-दण्डनाथा-पुरस्कृता । ज्वाला-मालिनिकाक्षिप्त-विह्नप्राकार-मध्यगा ॥ २७॥ भण्डसैन्य-वधोद्यक्त-शक्ति-विक्रम-हर्षिता । नित्या-पराक्रमाटोप-निरीक्षण-समुत्सुका ॥ २८॥ भण्डपुत्र-वधोद्युक्त-बाला-विक्रम-निन्दिता । मन्त्रिण्यम्बा-विरचित-विषङ्ग-वध-तोषिता ॥ २९॥ विशुक्र-प्राणहरण-वाराही-वीर्य-नन्दिता । कामेश्वर-मुखालोक-कल्पित-श्रीगणेश्वरा ॥ ३०॥ महागणेश-निर्भिन्न-विघ्नयन्त्र-प्रहर्षिता । भण्डासुरेन्द्र-निर्मुक्त-शस्त्र-प्रत्यस्त्र-वर्षिणी ॥ ३१॥ कराङ्गलि-नखोत्पन्न-नारायण-दुशाकृतिः । महा-पाशुपतास्त्राग्नि-निर्दग्धासुर-सैनिका ॥ ३२॥ कामेश्वरास्त्र-निर्देग्ध-सभण्डासुर-शून्यका । ब्रह्मोपेन्द्र-महेन्द्रादि-देव-संस्तृत-वैभवा ॥ ३३॥ हर-नेत्राग्नि-संदग्ध-काम-सञ्जीवनौषधिः । श्रीमद्वाग्भव-कृटैक-स्वरूप-मुख-पङ्कजा ॥ ३४॥ कण्ठाधः-कटि-पर्यन्त-मध्यकूट-स्वरूपिणी। शक्ति-कूटैकतापन्न-कट्यधोभाग-धारिणी ॥ ३५॥ मूल-मन्त्रात्मिका मूलकूटत्रय-कलेबरा। कुलामृतैक-रसिका कुलसंकेत-पालिनी ॥ ३६॥ कुलाङ्गना कुलान्तस्था कौलिनी कुलयोगिनी । अकुला समयान्तस्था समयाचार-तत्परा ॥ ३७॥ मुलाधारैक-निलया ब्रह्मग्रन्थि-विभेदिनी । मणि-पुरान्तरुदिता विष्णुग्रन्थि-विभेदिनी ॥ ३८॥ आज्ञा-चक्रान्तरालस्था रुद्रग्रन्थि-विभेदिनी । सहस्राराम्बुजारूढा सुधा-साराभिवर्षिणी ॥ ३९॥

तिडल्लता-समरुचिः षद्दकोपरि-संस्थिता ।

महासक्तिः कुण्डलिनी बिसतन्तु-तनीयसी ॥ ४०॥

भवानी भावनागम्या भवारण्य-कुठारिका ।

भद्रप्रिया भद्रमूर्तिर् भक्त-सौभाग्यदायिनी ॥ ४१॥

भक्तिप्रिया भक्तिगम्या भक्तिवश्या भयापहा ।

शाम्भवी शारदाराध्या शर्वाणी शर्मदायिनी ॥ ४२॥

शाङ्करी श्रीकरी साध्वी शरचन्द्र-निभानना ।

शातोदरी शान्तिमती निराधारा निरञ्जना ॥ ४३॥

निर्लेपा निर्मला नित्या निराकारा निराकुला । निर्गुणा निष्कला शान्ता निष्कामा निरुपष्ठवा ॥ ४४॥

नित्यमुक्ता निर्विकारा निष्प्रपञ्चा निराश्रया । नित्यशुद्धा नित्यबुद्धा निरवद्या निरन्तरा ॥ ४५॥

निष्कारणा निष्कलङ्का निरुपाधिर् निरीश्वरा ।

नीरागा रागमथनी निर्मदा मदनाशिनी ॥ ४६॥

निश्चिन्ता निरहंकारा निर्मोहा मोहनाशिनी । निर्ममा ममताहन्त्री निष्पापा पापनाशिनी ॥ ४७॥

निष्क्रोधा क्रोधशमनी निर्लोभा लोभनाशिनी । निःसंशया संशयघ्री निर्भवा भवनाशिनी ॥ ४८॥ or निस्संशया

निर्विकल्पा निराबाधा निर्मेदा भेदनाशिनी । निर्नाशा मृत्युमथनी निष्क्रिया निष्परिग्रहा ॥ ४९॥

निस्तुला नीलचिकुरा निरपाया निरत्यया । दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा दुःखहन्त्री सुखप्रदा ॥ ५०॥

दुष्टदूरा दुराचार-शमनी दोषवर्जिता । सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिक-वर्जिता ॥ ५१॥

सर्वशक्तिमयी सर्व-मङ्गला सद्गतिप्रदा । सर्वेश्वरी सर्वमयी सर्वमन्त्र-स्वरूपिणी ॥ ५२॥

सर्व-यन्त्रात्मिका सर्व-तन्त्ररूपा मनोन्मनी ।

माहेश्वरी महादेवी महालक्ष्मीर मुडप्रिया ॥ ५३॥ महारूपा महापूज्या महापातक-नाशिनी । महामाया महासत्त्वा महाशक्तिर महारतिः ॥ ५४॥ महाभोगा महैश्वर्या महावीर्या महाबला। महाबुद्धिर महासिद्धिर महायोगेश्वरेश्वरी ॥ ५५॥ महातन्त्रा महामन्त्रा महायन्त्रा महासना । महायाग-क्रमाराध्या महाभैरव-पूजिता ॥ ५६॥ महेश्वर-महाकल्प-महाताण्डव-साक्षिणी। महाकामेश-महिषी महात्रिपुर-सुन्दरी ॥ ५७॥ चतुःषष्ट्रपचाराढ्या चतुःषष्टिकलामयी । महाचतुः-षष्टिकोटि-योगिनी-गणसेविता ॥ ५८॥ मनुविद्या चन्द्रविद्या चन्द्रमण्डल-मध्यगा। चारुरूपा चारुहासा चारुचन्द्र-कलाधरा ॥ ५९॥ चराचर-जगन्नाथा चक्रराज-निकेतना । पार्वती पद्मनयना पद्मराग-समप्रभा ॥ ६०॥ पञ्च-प्रेतासनासीना पञ्चब्रह्म-स्वरूपिणी । चिन्मयी परमानन्दा विज्ञान-घनरूपिणी ॥ ६१॥ ध्यान-ध्यात-ध्येयरूपा धर्माधर्म-विवर्जिता । विश्वरूपा जागरिणी स्वपन्ती तैजसात्मिका ॥ ६२॥ सुप्ता प्राज्ञात्मिका तुर्या सर्वावस्था-विवर्जिता । सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा गोम्री गोविन्दरूपिणी ॥ ६३॥ संहारिणी रुद्ररूपा तिरोधान-करीश्वरी । सदाशिवाऽनुग्रहदा पञ्चकृत्य-परायणा ॥ ६४॥ भानुमण्डल-मध्यस्था भैरवी भगमालिनी । पद्मासना भगवती पद्मनाभ-सहोदरी ॥ ६५॥ उन्मेष-निमिषोत्पन्न-विपन्न-भुवनावली । सहस्र-शीर्षवद्ना सहस्राक्षी सहस्रपात् ॥ ६६॥

आब्रह्म-कीट-जननी वर्णाश्रम-विधायिनी । निजाज्ञारूप-निगमा पुण्यापुण्य-फलप्रदा ॥ ६७॥ श्रुति-सीमन्त-सिन्द्री-कृत-पादाज्ज-धूलिका । सकलागम-सन्दोह-शुक्ति-सम्पुट-मौक्तिका ॥ ६८॥ पुरुषार्थप्रदा पूर्णा भोगिनी भुवनेश्वरी । अम्बिकाऽनादि-निधना हरिब्रह्मेन्द्र-सेविता ॥ ६९॥ नारायणी नादरूपा नामरूप-विवर्जिता । हींकारी हीमती हृद्या हेयोपादेय-वर्जिता ॥ ७०॥ राजराजार्चिता राज्ञी रम्या राजीवलोचना । रञ्जनी रमणी रस्या रणिकिङ्किणि-मेखला ॥ ७१॥ रमा राकेन्दुवद्ना रतिरूपा रतिप्रिया। रक्षाकरी राक्षसन्नी रामा रमणलम्पटा ॥ ७२॥ काम्या कामकलारूपा कदम्ब-कुसुम-प्रिया। कल्याणी जगतीकन्दा करुणा-रस-सागरा ॥ ७३॥ कलावती कलालापा कान्ता कादम्बरीप्रिया। वरदा वामनयना वारुणी-मद-विह्वला ॥ ७४॥ विश्वाधिका वेदवेद्या विन्ध्याचल-निवासिनी। विधात्री वेदजननी विष्णुमाया विलासिनी ॥ ७५॥ क्षेत्रस्वरूपा क्षेत्रेशी क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-पालिनी । क्षयवृद्धि-विनिर्मुक्ता क्षेत्रपाल-समर्चिता ॥ ७६॥ विजया विमला वन्द्या वन्दारु-जन-वत्सला । वाग्वादिनी वामकेशी वह्निमण्डल-वासिनी ॥ ७७॥ भक्तिमत्-कल्पलतिका पशुपाश-विमोचिनी। संहताशेष-पाषण्डा सदाचार-प्रवर्तिका ॥ ७८॥ or पाखण्डा तापत्रयाग्नि-सन्तप्त-समाह्णादन-चन्द्रिका । तरुणी तापसाराध्या तनुमध्या तमोऽपहा ॥ ७९॥

चितिस्तत्पद-लक्ष्यार्था चिदेकरस-रूपिणी। स्वात्मानन्द-लवीभृत-ब्रह्माद्यानन्द-सन्ततिः ॥ ८०॥ परा प्रत्यकितीरूपा पश्यन्ती परदेवता । मध्यमा वैखरीरूपा भक्त-मानस-हंसिका ॥ ८१॥ कामेश्वर-प्राणनाडी कृतज्ञा कामपूजिता । शृङ्गार-रस-सम्पूर्णा जया जालन्धर-स्थिता ॥ ८२॥ ओड्याणपीठ-निलया बिन्दु-मण्डलवासिनी । रहोयाग-क्रमाराध्या रहस्तर्पण-तर्पिता ॥ ८३॥ सद्यःप्रसादिनी विश्व-साक्षिणी साक्षिवर्जिता । षडङ्गदेवता-युक्ता षाङ्गण्य-परिपूरिता ॥ ८४॥ नित्यक्किन्ना निरुपमा निर्वाण-सुख-दायिनी । नित्या-षोडशिका-रूपा श्रीकण्ठार्घ-शरीरिणी ॥ ८५॥ प्रभावती प्रभारूपा प्रसिद्धा परमेश्वरी । मूलप्रकृतिर् अव्यक्ता व्यक्ताव्यक्त-स्वरूपिणी ॥ ८६॥ व्यापिनी विविधाकारा विद्याविद्या-स्वरूपिणी । महाकामेश-नयन-कुमुदाह्वाद-कौमुदी ॥ ८७॥ भक्त-हार्द्-तमोभेद-भानुमद्भानु-सन्ततिः । शिवदूती शिवाराध्या शिवमूर्तिः शिवङ्करी ॥ ८८॥ शिवप्रिया शिवपरा शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता । अप्रमेया स्वप्रकाशा मनोवाचामगोचरा ॥ ८९॥ चिच्छक्तिश् चेतनारूपा जडशक्तिर् जडात्मिका । गायत्री व्याहृतिः सन्ध्या द्विजबन्द-निषेविता ॥ ९०॥ तत्त्वासना तत्त्वमयी पञ्च-कोशान्तर-स्थिता । निःसीम-महिमा नित्य-यौवना मद्शालिनी ॥ ९१॥ or निस्सीम मदघूर्णित-रक्ताक्षी मदपाटल-गण्डभूः। चन्दन-द्रव-दिग्धाङ्गी चाम्पेय-कुसुम-प्रिया ॥ ९२॥ कुराला कोमलाकारा कुरुकुला कुलेश्वरी।

कुलकुण्डालया कौल-मार्ग-तत्पर-सेविता ॥ ९३॥ कुमार-गणनाथाम्बा तृष्टिः पृष्टिर् मतिर् धृतिः । शान्तिः स्वस्तिमती कान्तिर नन्दिनी विघ्ननाशिनी ॥ ९४॥ तेजोवती त्रिनयना लोलाक्षी-कामरूपिणी। मालिनी हंसिनी माता मलयाचल-वासिनी ॥ ९५॥ सुमुखी नलिनी सुभ्रः शोभना सुरनायिका । कालकण्ठी कान्तिमती क्षोभिणी सूक्ष्मरूपिणी ॥ ९६॥ वज्रेश्वरी वामदेवी वयोऽवस्था-विवर्जिता । सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धमाता यशस्विनी ॥ ९७॥ विशुद्धिचक्र-निलयाऽऽरक्तवर्णा त्रिलोचना । खट्वाङ्गादि-प्रहरणा वदनैक-समन्विता ॥ ९८॥ पायसान्नप्रिया त्वक्स्था पशुलोक-भयङ्करी। अमृतादि-महाशक्ति-संवृता डाकिनीश्वरी ॥ ९९॥ अनाहताज्ज-निलया श्यामाभा वदनद्वया । दंष्टोज्ज्वलाऽक्ष-मालादि-धरा रुधिरसंस्थिता ॥ १००॥ कालरात्र्यादि-शक्त्यौघ-वृता स्निग्धौदनप्रिया। महावीरेन्द्र-वरदा राकिण्यम्बा-स्वरूपिणी ॥ १०१॥ मणिपूराज्ज-निलया वदनत्रय-संयुता । वज्रादिकायुधोपेता डामर्यादिभिरावृता ॥ १०२॥ रक्तवर्णा मांसनिष्ठा गुडान्न-प्रीत-मानसा । समस्तभक्त-सुखदा लाकिन्यम्बा-स्वरूपिणी ॥ १०३॥ स्वाधिष्ठानाम्बुज-गता चतुर्वऋ-मनोहरा । शूलाद्यायुध-सम्पन्ना पीतवर्णाऽतिगर्विता ॥ १०४॥ मेदोनिष्ठा मधुप्रीता बन्धिन्यादि-समन्विता । दध्यन्नासक्त-हृदया काकिनी-रूप-धारिणी ॥ १०५॥ मूलाधाराम्बुजारूढा पञ्च-वञ्चाऽस्थि-संस्थिता । अङ्कराादि-प्रहरणा वरदादि-निषेविता ॥ १०६॥

मुद्गौदनासक्त-चित्ता साकिन्यम्बा-स्वरूपिणी। आज्ञा-चक्राज्ञ-निलया शुक्कवर्णा षडानना ॥ १०७॥ मज्जासंस्था हंसवती-मुख्य-शक्ति-समन्विता । हरिद्राञ्जैक-रसिका हाकिनी-रूप-धारिणी ॥ १०८॥ सहस्रदल-पद्मस्था सर्व-वर्णोप-शोभिता । सर्वायुधधरा शुक्क-संस्थिता सर्वतोमुखी ॥ १०९॥ सर्वौदन-प्रीतचित्ता याकिन्यम्बा-स्वरूपिणी। स्वाहा स्वधाऽमतिरु मेधा श्रुतिः स्मृतिरु अनुत्तमा ॥ ११०॥ पुण्यकीर्तिः पुण्यलभ्या पुण्यश्रवण-कीर्तना । पुलोमजार्चिता बन्ध-मोचनी बन्धुरालका ॥ १११॥ or मोचनी बर्बरालका विमर्शरूपिणी विद्या वियदादि-जगत्प्रसूः । सर्वव्याधि-प्रशमनी सर्वमृत्यु-निवारिणी ॥ ११२॥ अग्रगण्याऽचिन्त्यरूपा कलिकल्मष-नाशिनी । कात्यायनी कालहन्त्री कमलाक्ष-निषेविता ॥ ११३॥ ताम्बूल-पूरित-मुखी दाडिमी-कुसुम-प्रभा। मृगाक्षी मोहिनी मुख्या मुडानी मित्ररूपिणी ॥ ११४॥ नित्यतुप्ता भक्तनिधिर् नियन्त्री निखिलेश्वरी । मैत्र्यादि-वासनालभ्या महाप्रलय-साक्षिणी ॥ ११५॥ परा शक्तिः परा निष्ठा प्रज्ञानघन-रूपिणी । माध्वीपानालसा मत्ता मातुका-वर्ण-रूपिणी ॥ ११६॥ महाकैलास-निलया मृणाल-मृद्द-दोर्लता । महनीया दयामूर्तिरु महासाम्राज्य-शालिनी ॥ ११७॥ आत्मविद्या महाविद्या श्रीविद्या कामसेविता । श्री-षोडशाक्षरी-विद्या त्रिकूटा कामकोटिका ॥ ११८॥ कटाक्ष-किङ्करी-भूत-कमला-कोटि-सेविता। शिरःस्थिता चन्द्रनिभा भालस्थेन्द्र-धनुःप्रभा ॥ ११९॥

हृदयस्था रविप्रख्या त्रिकोणान्तर-दीपिका । दाक्षायणी दैत्यहन्त्री दक्षयज्ञ-विनाशिनी ॥ १२०॥ दरान्दोलित-दीर्घाक्षी दर-हासोज्ज्वलन्-मुखी। गुरुमूर्तिर् गुणनिधिर् गोमाता गृहजन्मभूः ॥ १२१॥ देवेशी दण्डनीतिस्था दहराकाश-रूपिणी। प्रतिपन्मुख्य-राकान्त-तिथि-मण्डल-पूजिता ॥ १२२॥ कलात्मिका कलानाथा काव्यालाप-विनोदिनी । or विमोदिनी सचामर-रमा-वाणी-सव्य-दक्षिण-सेविता ॥ १२३॥ आदिशक्तिर् अमेयाऽऽत्मा परमा पावनाकृतिः । अनेककोटि-ब्रह्माण्ड-जननी दिव्यविग्रहा ॥ १२४॥ क्रींकारी केवला गुह्या कैवल्य-पददायिनी। त्रिपुरा त्रिजगद्वन्द्या त्रिमूर्तिस् त्रिद्दोश्वरी ॥ १२५॥ त्र्यक्षरी दिव्य-गन्धाट्या सिन्दूर-तिलकाञ्चिता। उमा शैलेन्द्रतनया गौरी गन्धर्व-सेविता ॥ १२६॥ विश्वगर्भा स्वर्णगर्भाऽवरदा वागधीश्वरी। ध्यानगम्याऽपरिच्छेद्या ज्ञानदा ज्ञानविग्रहा ॥ १२७॥ सर्ववेदान्त-संवेद्या सत्यानन्द-स्वरूपिणी। लोपामुद्रार्चिता लीला-क्कप्त-ब्रह्माण्ड-मण्डला ॥ १२८॥ अदृश्या दृश्यरिहता विज्ञात्री वेद्यवर्जिता । योगिनी योगदा योग्या योगानन्दा युगन्धरा ॥ १२९॥ इच्छाशक्ति-ज्ञानशक्ति-क्रियाशक्ति-स्वरूपिणी। सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा सदसद्रूप-धारिणी ॥ १३०॥ अष्टमूर्तिर् अजाजैत्री लोकयात्रा-विधायिनी । or अजाजेत्री एकाकिनी भूमरूपा निर्द्वैता द्वैतवर्जिता ॥ १३१॥ अन्नदा वसुदा वृद्धा ब्रह्मात्मैक्य-स्वरूपिणी । बृहती ब्राह्मणी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दा बलिप्रिया ॥ १३२॥ भाषारूपा बृहत्सेना भावाभाव-विवर्जिता ।

सुखाराध्या शुभकरी शोभना सुलभा गतिः ॥ १३३॥ राज-राजेश्वरी राज्य-दायिनी राज्य-वल्लभा। राजत्कृपा राजपीठ-निवेशित-निजाश्रिता ॥ १३४॥ राज्यलक्ष्मीः कोशनाथा चतुरङ्ग-बलेश्वरी । साम्राज्य-दायिनी सत्यसन्धा सागरमेखला ॥ १३५॥ दीक्षिता दैत्यशमनी सर्वलोक-वशङ्करी। सर्वार्थदात्री सावित्री सिचदानन्द-रूपिणी ॥ १३६॥ देश-कालापरिच्छिन्ना सर्वगा सर्वमोहिनी । सरस्वती शास्त्रमयी गुहाम्बा गुह्यरूपिणी ॥ १३७॥ सर्वोपाधि-विनिर्मुक्ता सदाशिव-पतिव्रता । सम्प्रदायेश्वरी साध्वी गुरुमण्डल-रूपिणी ॥ १३८॥ कुलोत्तीर्णा भगाराध्या माया मधुमती मही । गणाम्बा गुह्यकाराध्या कोमलाङ्गी गुरुप्रिया ॥ १३९॥ स्वतन्त्रा सर्वतन्त्रेशी दक्षिणामूर्ति-रूपिणी। सनकादि-समाराध्या शिवज्ञान-प्रदायिनी ॥ १४०॥ चित्कलाऽऽनन्द-कलिका प्रेमरूपा प्रियङ्करी। नामपारायण-प्रीता नन्दिविद्या नटेश्वरी ॥ १४१॥ मिथ्या-जगदधिष्ठाना मुक्तिदा मुक्तिरूपिणी। लास्यप्रिया लयकरी लज्जा रम्भादिवन्दिता ॥ १४२॥ भवदाव-सुधावृष्टिः पापारण्य-दवानला । दौर्भाग्य-तूलवातूला जराध्वान्त-रविप्रभा ॥ १४३॥ भाग्याब्यि-चन्द्रिका भक्त-चित्तकेकि-घनाघना । रोगपर्वत-दम्भोलिर् मृत्युदारु-कुठारिका ॥ १४४॥ महेश्वरी महाकाली महाग्रासा महाशना। अपर्णा चण्डिका चण्डमुण्डासुर-निषूदिनी ॥ १४५॥ क्षराक्षरात्मिका सर्व-लोकेशी विश्वधारिणी । त्रिवर्गदात्री सुभगा त्र्यम्बका त्रिगुणात्मिका ॥ १४६॥

स्वर्गापवर्गदा शुद्धा जपापुष्प-निभाकृतिः । ओजोवती द्यतिधरा यज्ञरूपा प्रियव्रता ॥ १४७॥ दुराराध्या दुराधर्षा पाटली-कुसुम-प्रिया । महती मेरुनिलया मन्दार-कुसुम-प्रिया ॥ १४८॥ वीराराध्या विराडूपा विरजा विश्वतोमुखी । प्रत्ययूपा पराकाशा प्राणदा प्राणरूपिणी ॥ १४९॥ मार्ताण्ड-भैरवाराध्या मन्त्रिणीन्यस्त-राज्यधः । or मार्तण्ड त्रिपुरेशी जयत्सेना निस्नैगुण्या परापरा ॥ १५०॥ सत्य-ज्ञानानन्द-रूपा सामरस्य-परायणा । कपर्दिनी कलामाला कामधुक् कामरूपिणी ॥ १५१॥ कलानिधिः काव्यकला रसज्ञा रसशेवधिः । पुष्टा पुरातना पूज्या पुष्करा पुष्करेक्षणा ॥ १५२॥ परंज्योतिः परंधाम परमाणुः परात्परा । पाशहस्ता पाशहन्त्री परमन्त्र-विभेदिनी ॥ १५३॥ मूर्ताऽमूर्ताऽनित्यतृप्ता मुनिमानस-हंसिका । सत्यव्रता सत्यरूपा सर्वान्तर्यामिनी सती ॥ १५४॥ ब्रह्माणी ब्रह्मजननी बहुरूपा बुधार्चिता । प्रसवित्री प्रचण्डाऽऽज्ञा प्रतिष्ठा प्रकटाकृतिः ॥ १५५॥ प्राणेश्वरी प्राणदात्री पञ्चाशत्पीठ-रूपिणी। विश्रृङ्खला विविक्तस्था वीरमाता वियत्प्रसुः ॥ १५६॥ मुकन्दा मुक्तिनिलया मूलविग्रह-रूपिणी। भावज्ञा भवरोगघ्नी भवचक-प्रवर्तिनी ॥ १५७॥ छन्दःसारा शास्त्रसारा मन्त्रसारा तलोदरी । उदारकीर्तिर उद्दामवैभवा वर्णरूपिणी ॥ १५८॥ जन्ममृत्यु-जरातप्त-जनविश्रान्ति-दायिनी । सर्वोपनिष-दुदु-घुष्टा शान्त्यतीत-कलात्मिका ॥ १५९॥

गम्भीरा गगनान्तस्था गर्विता गानलोलुपा । कल्पना-रहिता काष्ठाऽकान्ता कान्तार्ध-विग्रहा ॥ १६०॥ कार्यकारण-निर्मुक्ता कामकेलि-तरङ्गिता । कनत्कनकता-टङ्का लीला-विग्रह-धारिणी ॥ १६१॥ अजा क्षयविनिर्मुक्ता मुग्धा क्षिप्र-प्रसादिनी । अन्तर्मुख-समाराध्या बहिर्मुख-सुदूर्लभा ॥ १६२॥ त्रयी त्रिवर्गनिलया त्रिस्था त्रिपुरमालिनी । निरामया निरालम्बा स्वात्मारामा सुधासृतिः ॥ १६३॥ or सुधास्त्रतिः संसारपङ्क-निर्मग्न-समुद्धरण-पण्डिता । यज्ञप्रिया यज्ञकर्जी यजमान-स्वरूपिणी ॥ १६४॥ धर्माधारा धनाध्यक्षा धनधान्य-विवर्धिनी । विप्रप्रिया विप्ररूपा विश्वभ्रमण-कारिणी ॥ १६५॥ विश्वयासा विद्रमाभा वैष्णवी विष्णुरूपिणी। अयोनिर् योनिनिलया कृटस्था कुलरूपिणी ॥ १६६॥ वीरगोष्ठीप्रिया वीरा नैष्कर्म्या नादरूपिणी। विज्ञानकलना कल्या विदग्धा बैन्दवासना ॥ १६७॥ तत्त्वाधिका तत्त्वमयी तत्त्वमर्थ-स्वरूपिणी । सामगानप्रिया सौम्या सदाशिव-कुट्रम्बिनी ॥ १६८॥ or सोम्या सव्यापसव्य-मार्गस्था सर्वापद्विनिवारिणी । स्वस्था स्वभावमधुरा धीरा धीरसमर्चिता ॥ १६९॥ चैतन्यार्घ्य-समाराध्या चैतन्य-कुसुमप्रिया । सदोदिता सदातुष्टा तरुणादित्य-पाटला ॥ १७०॥ दक्षिणा-दक्षिणाराध्या दरस्मेर-मुखाम्बुजा । कौलिनी-केवलाऽनर्घ्य-कैवल्य-पददायिनी ॥ १७१॥ स्तोत्रप्रिया स्तुतिमती श्रुति-संस्तुत-वैभवा। मनस्विनी मानवती महेशी मङ्गलाकृतिः ॥ १७२॥ विश्वमाता जगद्धात्री विशालाक्षी विरागिणी ।

प्रगल्भा परमोदारा परामोदा मनोमयी ॥ १७३॥ व्योमकेशी विमानस्था विज्ञणी वामकेश्वरी। पञ्चयज्ञ-प्रिया पञ्च-प्रेत-मञ्जाधिशायिनी ॥ १७४॥ पञ्चमी पञ्चभूतेशी पञ्च-संख्योपचारिणी। शाश्वती शाश्वतैश्वर्या शर्मदा शम्भुमोहिनी ॥ १७५॥ धरा धरसुता धन्या धर्मिणी धर्मवर्धिनी । लोकातीता गुणातीता सर्वातीता शमात्मिका ॥ १७६॥ बन्धक-कुसमप्रख्या बाला लीलाविनोदिनी । समङ्गली सुखकरी सुवेषाढ्या सुवासिनी ॥ १७७॥ सुवासिन्यर्चन-प्रीताऽऽशोभना शुद्धमानसा । बिन्दु-तर्पण-सन्तुष्टा पूर्वजा त्रिपुराम्बिका ॥ १७८॥ दशमुद्रा-समाराध्या त्रिपुराश्री-वशङ्करी । ज्ञानमुद्रा ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेय-स्वरूपिणी ॥ १७९॥ योनिमुद्रा त्रिखण्डेशी त्रिगुणाम्बा त्रिकोणगा । अनघाऽद्भुत-चारित्रा वाञ्छितार्थ-प्रदायिनी ॥ १८०॥ अभ्यासातिशय-ज्ञाता षडध्वातीत-रूपिणी । अव्याज-करुणा-मूर्तिर् अज्ञान-ध्वान्त-दीपिका ॥ १८१॥ आबाल-गोप-विदिता सर्वानुल्रह्य-शासना । श्रीचकराज-निलया श्रीमत-त्रिपुरसन्दरी ॥ १८२॥ श्रीशिवा शिव-शक्त्यैक्य-रूपिणी ललिताम्बिका । एवं श्रीलिता देव्या नाम्नां साहस्रकं जगुः॥ ॥ इति श्रीब्रह्माण्डपराणे उत्तरखण्डे श्रीहयग्रीवागस्त्यसंवादे श्रीलिलता सहस्रनाम स्तोत्र कथनं सम्पूर्णम् ॥

Before we begin, let us offer ourselves at the feet of the Divine Mother, shrImat mahAtripurasundarI. This introduction deals with the background on lalitAsahasranAma (the purANa etc) and the importance of Shri Chakra, the diagrammitical form for meditation. (Only a brief description is provided here since it has been extensively described by Adi Shankara in the text of SaundaryalaharI. A detailed description of Lalita yantra (Shri Chakra) is given in the Hindu Tantrik page http://www.shivashakti.com/)

Among the 18 purANas, brahmANDa-purANa is well known for the

extolation of Lalita. It explains in detail the appearance of the Goddess Lalita to save the world from the clutches of the demon bhaNDAsura. There are three important sub-texts in this purANa.

The first of these texts is LalitopAkhyAna, consisting of 45 chapters and is found in the last section of the purANa. The last five chapters are especially well known. They extol the greatness of the Divine mother, the significance of the mantra of the goddess (shoDashAkSharI-vidyA), the various mudras and postures to be practiced, meditations, initiations etc., and the mystical placement of the deities involved in Shri Chakra.

The next text is the lalitA trishati in which 300 names of the goddess is featured. There is a well known commentary on this work by Adi ShankarAchArya.

The third text is the celebrated LalitA sahasranAma, which consists of 320 verses in three chapters. The first chapter is 51 verses, and relates that the 1000 names of LalitA were recited by various devatas as commanded by the goddess herself. This chapter also explains that the verses are in anuShTup ChaNDaH(metre known as anuShTup)

॥ श्रीलिलतासहस्रनामस्तोत्रम् ॥

and that the deity Lalita is invoked in three kUTas (vAgbhava, kAmarAja, and shakti). The second chapter of the text contains the thousand names of the goddess in 182 1/2 verses (which is transliterated below). The third and final chapter is 86 1/2 verses long and enumerates the benefits accrued by reciting these one thousand names of the Goddess. This is mainly to encourage people to recite the names with concentration to achieve, if not anything else, a peace of mind.

Lalita trishati and lalitA sahasranAma are dialogues between the sage Agastya and the god Hayagriva (Pronounced as hayagrIva). Hayagriva is the incarnation of ViShNu who assumed the form of a horse to kill a demon by the same name. Agastya was a sage of great renown, who is immortalized as a star in the celestial heavens(one of the seven Rishi-s, saptarShi or Ursa Major).

He is the patron saint of Tamilnadu being a founder of a system of medicine called Siddha, and also having drunk the whole ocean in his kamaNDalum. According to yAska's

Nirukta, Agastya is the half-brother of the great sage, VasishTha.

The story of the meeting of Agastya and Hayagriva is given in the lalitopAkhyAna and is quite interesting. Agastya was visiting several places of pilgrimage and was sad to see many people steeped in ignorance and involved in only sensual pleasures. He came to kA nchi and worshipped kAmAkShI and sought

a solution for the masses. Pleased with the devotion and his caring for the society, Lord ViShNu appeared before Agastya

and provided the sage Agastya with the solution of 'curing' the worldly folk from ignorance. He explained that He is the primordial principle, and the source and the end of everything. Though He is above forms and guNas, He involves himself in them. He goes on to explain that a person should recognize that He is the pradhAna (primordial) transformed into the universe, and that He is also the puruSha (conscious spirit) who is transcendental and beyond all qualities(guNa-s) and forms. However to recognize this, one has to perform severe penance, self-discipline etc. If (since) this is difficult, Lord ViShNu advises that the worship of the goddess will achieve the purpose of life, given as liberation from bondage, very easily. He points out that even other Gods like Shiva and Brahma have worshiped the goddess TripurA. ViShNu concludes his discourse saying that this was revealed to Agastya so that he (Agastya) can spread the message to god, sages, and humans. ViShNu requests Agastya to approach

Agastya approaches Hayagriva with devotion and reverence. Hayagriva reveals to Agastya that the great Goddess, lalitA, is without beginning or end and is the foundation of the entire universe. The great goddess abides in everyone and can be realized only in meditation. The worship of goddess is done with the lalitA sahasranamA (1000 names) or with trishati (300 names) or with aShTottaranAma (108 names) or

his incarnation, Hayagriva and disappears from Agastya's

sight.

In tantra shAstra, each devi/deva is worshipped as a mantra,

with Shri Chakra (diagrammatical form for meditation).

॥ श्रीलिलतासहस्रनामस्तोत्रम् ॥

and yantra. Shri Chakra is used to represent the divine mother diagrammatically. It denotes how the power of a small point in the centre of the Shri Chakra transforms itself into a series of triangles, circles, and lines. One can meditate on the Shri Chakra itself knowing the significance of the triangles and circles. These forms respresent the various transformations of the Reality. One can realize that the universe has evolved through the undifferentiated consciousness and has eventually become the universe as

we know it. The recitation of sahasranAma and trishati are used in the worship of Shri Chakra. The correspondence between Shri Chakra as a yantra and the fifteen letter mantra of the goddess (pa nchadashIvidyA, pronounced panchadashIvidyA) is achieved by carefully studying the Shri Chakra which is constructed using the symbolism of the three kUTa-s and the significance of the fifteen letters of the shrIvidyA. It is said that if meditation on Shri Chakra is not possible, recitation of the sahasranAma with utmost devotion would confer the same benefits, perhaps in longer time-frame.

The sahasranAma also mentions how to meditate on the various centres of consciousness (chakras) in one's body. Kundalini, meaning

coiled up, ordinarly resides in the muladhAra chakra, at the base of spine, and when it rises to the sahasrAra chakra at the top of the head, one becomes aware of the ultimate reality.

Before reciting the sahasranAma, it is advised that the divine mother be meditated upon according to the dhyAna shloka-s, given in the beginning of the text.

May the Divine Mother guide us in our every action and thought,

and may She confer upon us the greatest gift of all, mokSha, the liberation.

OM tat sat.

Encoding and notes provided by Prof. M. Giridhar giridhar@chemeng.Isc.ernet.in (Proofread by Kirk Wortman kirkwort@hotmail.com.)

→0**○**000

.. Shri Lalitasahasranama stotram ..

Searchable pdf was typeset using XeTeXgenerateactualtext feature of X=IATeX 0.99996

on August 20, 2017

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

TO CONT